आप कहते हैं...

श्री कैलाशानंदजी महाराज, हरिद्वार : ''संतों की परम्परा और संतों की प्रतिष्ठा का ख्याल सभीको रखना चाहिए । अभी थोड़े ही दिन पूर्व जगद्गुरु शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज के ऊपर जिस प्रकार की घिनौनी साजिश हुई और पूरा समाज देखता रहा; शासन, प्रशासन, सत्तारूढ़ जितने सारे लोग रहे वे सभी कहीं-न-कहीं मूकदर्शी रहे, आज वही व्यवस्था और वही समस्या आसारामजी बापू के ऊपर आयी है । महाराज श्री आसारामजी हों या कोई भी संस्थानधारी हों, उनको सीधा टारगेट बनाया जाय यह अत्यंत घृणित एवं निंदनीय प्रयास है ।''

श्री रमेश भाई ओझा, भागवत प्रवचनकर्ता : ''हमारे शंकराचार्य के लिए भी यही हुआ था । हमारे साधु-संत ऐसी किसी घटना में थोड़े ही लिप्त हो सकते हैं ! वे क्या अपनी जिम्मेदारी नहीं समझते ! वे कहाँ बैठे हैं, उनका क्या कर्तव्य है यह वे नहीं समझते ! लोगों को जो धर्म समझा रहे हैं, क्या वे अपना धर्म नहीं समझते ! इस प्रकार की प्रवृत्ति कोई महापुरुष कैसे कर सकता है ! प्रश्न ही नहीं उठता ।

जिनके मन में कोई-न-कोई स्वार्थ है, चाहे वह धन का हो, चाहे राजनैतिक स्वार्थ हो, चाहे अन्य प्रकार का स्वार्थ हो, वे समाज जाग्रत होकर सत्य की ओर बढ़ जाय यह सह नहीं पाते । इसलिए भी ऐसे लोग संतों के खिलाफ षड्यंत्र करते हैं ।''

श्री राजेश्वरजी महाराज, हरिद्वार : ''हिन्दू धर्म, हिन्दू धर्माचार्य, हिन्दू संस्कृति पर जितने भी प्रकार से वे लोग आक्रमण करना चाहते हैं, कर रहे हैं । ये सब विदेशी एजेंसियों के द्वारा और जो विदेशी ताकते हैं उनके इशारे पर हो रहे हैं । उनकी योजना है कि हिन्दू धर्म को बदनाम करने के लिए उनके धर्माचार्यों को बदनाम करो, हिन्दुओं की मान्यताओं को बदनाम करो । आसारामजी बापू जैसे अनेक महात्मा हैं जिन पर झूठे आरोप लगाये जा रहे हैं । किसी भी महात्मा पर इस प्रकार आरोप लगाना नितान्त ही गलत है और कोई भी आरोप लगाने से पहले तथ्यों की समीक्षा करनी चाहिए, छानबीन करनी चाहिए । शंकराचार्यजी पर जो आरोप लगाये थे वे आज तक सिद्ध नहीं हुए, सब कपोल-कल्पित कहानियाँ थीं । साधुओं के लिए इस तरह की कपोल-कल्पित कहानियाँ बनाना और उनको प्रदर्शित करना, यह राष्ट्र के लिए और समाज के लिए घातक है ।''

संत श्री बाबा हरपालसिंहजी महाराज, प्रमुख, रतवाड़ा साहिब गुरुद्वारा, मोहाली (पंजाब) : ''पूज्य महान संत बापूजी के ऊपर जो दोष लगाये जा रहे हैं वे निराधार हैं । हमने बापूजी को बहुत नजदीक से देखा है, हमें उनके साथ बहुत प्यार है । और ऐसी रूहानियत के ऊपर, ऐसे महापुरुषों के ऊपर जो दोष लगाते हैं वे बहुत ही निंदनीय हैं । हम इसके लिए सारे पंजाब के जितने भी आश्रमवाले हैं सब इसका विरोध करते हैं ।

बापूजी के यहाँ बहुत व्यापक दृष्टि है । यहाँ जो साम्प्रदायिक एकता है, बापूजी का जो प्रचार है, वह सबके लिए है । इसलिए हम पुरजोर अपील करते हैं कि ऐसे महापुरुषों के ऊपर ऐसे दोष न लगाये जायें ।

आज सारे सिख लोग, सारी सिख संगत इस बारे में एकजुट है कि बापूजी के लिए जो भी कुर्बानी करनी पड़े, हम उसके लिए तैयार हैं ।''

श्री अशोक सिंघलजी, अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष, विश्व हिन्दू परिषद : श्री अशोक सिंघलजी ने अहमदाबाद आश्रम को भेंट देकर पुलिस द्वारा साधकों की की गयी मारपीट तथा आश्रम में की गयी तोड़फोड़ व लूटमार का ब्यौरा लिया । उन्हें इस घटना से अत्यंत आघात लगा । व्यथित होकर उन्होंने कहा : ''मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इस काम को होने दिया, यह उनका बहुत बड़ा दोष है । इस दोष से वे मुक्त नहीं हो सकते ।

आपने यह होने कैसे दिया ? आपकी सरकार में हो रहा है !...''

आपने यह भी कहा : ''बापूजी के खिलाफ कुप्रचार खड़ा किया हुआ है । करोड़ों रुपये खर्च करके कुप्रचार करते हैं । इसी प्रकार शंकराचार्यजी को भी बहुत बड़ा अपराधी बना दिया गया था । प्रज्ञा साध्वी पर इल्जाम लगा दिया । यह एक पूरा षड्यंत्र है ईसाइयों का ।''

''संतों को लगातार अपमानित किया जा रहा है । शंकराचार्य श्री जयेन्द्र सरस्वतीजी महाराज, अमृतानंदमयी माँ, सत्य साँई बाबा, साध्वी प्रज्ञा के बाद अब आसारामजी बापू को आरोपित करके फँसाया जा रहा है । हिन्दू समाज अपने संतों के साथ किये जा रहे ऐसे व्यवहार को सहन नहीं करेगा । बापूजी के भक्तों द्वारा २६ नवम्बर को निकाली गयी रैली पर लाठीचार्ज किया जाना तथा लोगों को गिरफ्तार करना बर्बर कार्यवाही है । २७ नवम्बर को आश्रम पर हमला करके तोड़फोड़ करना एवं २०० से ज्यादा लोगों को बंदी बनाया जाना एक सोची-समझी रणनीति का हिस्सा है । भारतीय जनता पार्टी हाई कमान को इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए । पुलिस को आसारामजी बापू और उनके अनुयायियों का उत्पीड़न बंद करना चाहिए ।''

श्री गिरिराज किशोरजी, वरिष्ठ नेता, विश्व हिन्दू परिषद : ''हिन्दू साधु-संतों को बदनाम करने की यह एक साजिश चल रही है । इसके पहले भी शंकराचार्यजी को क्यों गिरफ्तार किया गया ? क्या कारण था ? जिनके समाज में ज्यादा कार्य चलते हैं, जो ज्यादा प्रसिद्ध होते हैं, हमेशा उनका विरोध होता है और सरकारें हमेशा विरोध करती हैं ।''

श्री मोहन भागवत, सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ : ''गुजरात सरकार एक संतुलित विचार करे और निर्दोषों को कष्ट न होने दे, यह बात हमने सरकार को कही है ।'' ❒